गांधीजीका जन्मदिन

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १२ | सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला | अंक २७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ५ सितम्बर, १९४८

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

स्वराज्यकी सफलता *

आजकी सभामें बहनें भी काफी तादादमें आयी हैं। यह देखकर मुझे आनन्द होता है। महिलायें सार्वजनिक कार्यमें सहयोग देंगी, तभी हमारे देशकी अुन्नति होगी। देवी अहिल्याबाअीका अुज्ज्वल अुदाहरण आप सबके सामने है ही। शायद आपकी यह अुपस्थिति अुसीका परिणाम है।

१५ अगस्त हमारे लिअे अेक पवित्र दिन है। आज हमारा स्वराज्य-शिशु ठीक अेक सालका हो चुका, अिस बातका आनन्द हम जरूर मना सकते हैं। लेकिन अुसके साथ हमें बहुत कुछ सोचना भी चाहिये। अक्सर छोटे बालकोंके पालन-पोषणमें काफी फिक्र रखनेकी जरूरत होती है। हिन्दुस्तानमें तो बहुतसे बालक प्राथमिक अवस्थामें ही मर जाते हैं। क्योंकि माता-पिताओंको छोटे बच्चोंकी हिफाजतका ज्ञान नहीं रहता। अिसलिअे अपने अिस स्वराज्य रूपी बालककी हिफाजत हमें बड़ी फिक्रसे करनी होगी।

हम अिस बातका अभिमान रख सकते हैं कि हम ३३ करोड़ हैं, हमारी कअी जातियाँ हैं, कअी धर्म और कअी भाषायें हैं, और कअी तरहके रीत-रिवाज हैं। अपनी अिस विविधतासे हमें लाभ अुठाना चाहिये। लेकिन विविधतामें जो अेकता छिपी हुअी है, अुसे कभी गौण नहीं समझना चाहिये। हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी समस्या सब लोगोंको अेक साथ रखनेकी समस्या है। लेकिन मुझे दुःख है कि आज चारों ओर भेदभाव बढ़ते दिखाअी पड़ते हैं। हमारा कर्तव्य तो यह है कि भेदभाव बढ़ाये बगैर हम अपनी अपनी विशेषतायें देशको समर्पण कर दें।

हिन्दुस्तानको सत्ता मिली है, अिसका अर्थ यही है कि गरीबोंकी सेवाके लिअे आज तक हमें जो सुविधायें नहीं थीं, वे मिली हैं। जिस प्रकार भरतने रामका राज्य समझकर सेवक वृत्तिसे राज्यका काम संभाला, अुसी तरह हमें समझना चाहिये कि राज्य गरीब जनताका है, और अुसके नामपर, अुसके ट्रस्टी बनकर हमें अुस राज्यको चलाना है। आज़ादीका सूर्य अुदय होनेके बाद गरीबोंको यह अनुभव होना चाहिये कि हर कोअी अुनकी सेवामें लग रहा है। अुन्हें दिखना चाहिये कि जो सुशिक्षित लोग पहले अुनके पास नहीं पहुँच सकते थे, वे अब अुनकी सेवामें जुट गये हैं। केवल झंडा फहरानेसे गरीबोंको स्वराज्यकी अनुभूति नहीं होती। अुन्हें तो स्वराज्यकी गर्मी महसूस होनी चाहिये।

सूर्यनारायणके अुदय होनेपर धनी गरीब सबके घरोंमें प्रकाश पहुँच जाता है। यह नहीं होता कि होलकर महाराजाके घरमें तो वह पहुँचे और मेहतरके यहाँ नहीं। दोनोंको वह अेक-सा सुख पहुँचाता है। ठीक यही बात स्वराज्यके बारेमें भी होनी चाहिये।

जनताके सामने हमने प्रतिज्ञा की थी कि स्वराज्य आनेपर हम आपके दुःख दूर करेंगे। अब स्वराज्य आ गया है। नदियाँ जिस तरह सब तरफसे दौड़ती हुअी समुद्रमें जाकर मिलती हैं, अुसी तरह हम सबको अपने भाअियोंकी सेवाके लिअे दौड़ जाना चाहिये। यह तो तभी होगा, जब हम अपने सारे भेद भूल जायँगे और हमारे लिअे दुनियामें दो ही चीजें रहेंगी: अेक, गरीब जनता — स्वामी — जिसकी हमें सेवा करनी है, और दूसरे हम — अुसके सेवक। तीसरी कोअी चीज हमारे लिअे होनी ही नहीं चाहिये।

अितने बड़े देशमें विचार-भेद होना स्वाभाविक है और अुसके अनुसार पक्ष-भेद भी। लेकिन मैं पूछता हूँ कि आप लोगोंके विचारोंमें कुछ समान अंश भी है या नहीं? अगर है तो समान कार्यक्रम बनाअिये और देशकी सेवामें लग जाअिये। अिस तरहका काम करनेसे हमारे भेद कम होते होते अेक दिन मिट जायँगे, और अच्छी बातोंका अपने आप प्रचार होने लगेगा। लेकिन अगर आजकी तरह भेद कायम रखनेकी कोशिश की गयी, तो लोग सत्ताके पीछे पड़ जायँगे और स्वराज्य प्राप्त होनेपर भी स्वराज्यका आनन्द हम नहीं भोग सकेंगे।

अेक बात और। हममेंसे हरअेकको खाने और पहननेके लिअे तो कुछ न कुछ चाहिये ही; और चूँकि हम जानते हैं कि हमारे देशमें अिसकी बड़ी कमी है, अिसलिअे जैसी कि अुपनिषदोंकी आज्ञा है, हमें पैदायशका व्रत लेना चाहिये। हम सब वकील, डॉक्टर, प्रोफेसर, व्यापारी, न्यायाधीश वगैरा रोज कुछ न कुछ निर्माण कार्य करेंगे, तो हमारी गरीबी दूर हो सकेगी। अिसलिअे गांधीजीने सबको सूत कातनेकी सलाह दी है। सूत कातना तो अिसलिअे सुझाया कि कपड़ेकी जरूरत हर अेकको होती है, और वह सब कर सकें अैसा आसान काम है। अिसका मतलब यही है कि हर अेकको निर्माण कार्य करना है। हमें वही कर्ममयी अुपासना रूढ़ करनी है, जो गीताने सिखाअी है, लेकिन जिसका मूल्य हम नहीं समझ सके हैं।

मुझे तो अिस विचारसे अत्यन्त स्फूर्ति मिलती है। हिन्दुस्तानके विचारकोंने पूरे तौरसे अिसपर सोचा नहीं था। भक्तिमार्गी भजन करते हैं। ध्यानयोगी ध्यानमें रमते हैं। ज्ञानी चिन्तनमें मस्त हैं। पर ये सब अैसा नहीं सोचते कि चूँकि हमें रोज कुछ न कुछ खानेको लगता ही है, अिसलिअे हम कुछ पैदायशका काम भी कर लें, ताकि अेक ही कर्मसे चित्तशुद्धि भी हो, भक्ति भी सधे और श्रमिकोंका बोझ भी कुछ कम हो।

हमारे यहाँ बीचके जमानेमें श्रमकी प्रतिष्ठा न रही। कारीगरोंको हमने नीच जातिके और अछूत समझा। मनुने कहा था — 'सदा शुचिः कारुहस्तः' यानी काम करनेवालेके हाथ हमेशा पवित्र रहते हैं। किन्तु हम यह चीज भूल गये। हरकोअी काम छोड़ने लगा। संन्यासीने काम छोड़ा, विद्यार्थियोंने काम छोड़ा, भक्तोंने भी छोड़ा। और अिस तरह काम करनेवाले जो लोग बच गये, अुनका बोझ बढ़ गया, और अुनकी तथा अुनके कामकी प्रतिष्ठा भी जाती रही। अिसलिअे अगर हमें स्वराज्यको सम्पन्न बनाना है, तो श्रमकी प्रतिष्ठा बढ़ानी होगी। अर्थात् श्रमका मूल्य भी बढ़ाना होगा। बढ़अी, प्रोफेसर और न्यायाधीशके

* तारीख १५ अगस्तको अिन्दौरकी अेक आमसभामें दिया हुआ आचार्य विनोबाका भाषण।

www.vinoba.in

वेतनके भेद मिटाने होंगे। जिस तरह सूर्य सबको समान प्रकाश देता है, चन्द्र सबको समान रूपसे शीतलता पहुँचाता है, और पृथ्वी, हवा, पानी सबके लिअे समान हैं, अुसी तरह आजीविकाके साधन सबको समान रूपसे मिलने चाहियें।

लोगोंको डर लगता है और वे पूछते हैं कि 'सब समान हो जावेंगे, तो हमारी प्रतिष्ठा कैसे रहेगी? हम तो अूँचे काम करनेवाले हैं।' मैं पूछता हूँ कि आपने भगवान कृष्णसे तो अूँचा काम नहीं किया है? कृष्णसे बढ़कर कोअी तत्त्वज्ञान हमें नहीं दिया है। वह कृष्ण क्या करते थे? ग्वालोंके बीच काम करते थे। गौवें चराते थे और घोड़ोंका खुर्रा करते थे। अुन्होंने धर्मराजके यहाँ यज्ञमें जूठन अुठानेका काम अपने लिअे माँग लिया था। हिन्दुस्तानका किसान गीता भी नहीं जानता। परन्तु आज पाँच हजार बरससे वह गोपालकृष्णकी जय जय बराबर करता आ रहा है। यह कैसे हुआ? क्योंकि अुसने देखा कि गोपालकृष्णने तत्त्वज्ञान भी दिया, राज भी किया और मजदूरका काम भी किया।

आज १५ अगस्तका दिन है। आपसे मैं प्रार्थना करता हूँ कि आज आप यह निश्चय कीजिये कि हम कोअी निर्माण कार्य किये बिना खायेंगे नहीं। अैसा करेंगे तो आप देखेंगे कि भारतकी धरतीपर स्वर्ग अुतर आवेगा और स्वराज्य समृद्ध होगा।

दा० मूं०

भूल सुधार

मि. अेच. अेस. अेल. पोलकने नीचेका संशोधन भेजनेकी कृपा की है:

"२० जूनके 'हरिजनसेवक'में मि. किंग्सले मार्टिनकी २७ जानवरी, १९४८को गांधीजीसे हुअी मुलाकातकी रिपोर्ट दी गयी है। अुसमें अेक छोटीसी भूल हुअी है।

"वह अिस तरह है:

"गांधीजीने आगे कहा कि जब दक्षिण अफ्रीकाके अेक करोड़पतिने वहाँकी अेक आम सभामें मेरा अिस तरह परिचय दिया कि 'गांधी अेक साधारण अहिंसक विरोध करनेवाला कमजोर आदमी है, क्योंकि हिन्दुस्तानी होनेके नाते न अुसके पास कोअी जमीन है, न कोअी हक,' तो मैंने अुसका विरोध किया था।"

"स्पष्ट है कि अिसमें मि. विलियम होस्केनका अुल्लेख है (देखिये, सत्याग्रह अिन साउथ अफ्रीका, पृ. १७४)। मि. होस्केन अेक अच्छे व्यापारी थे, लेकिन करोड़पति नहीं। वे दक्षिण अफ्रीकाके चेम्बर ऑफ कामर्सके सभापति थे और ट्रान्सवाल धारासभाके अुदारदली सदस्य थे। वे हिन्दुस्तानी कौमके अच्छे मित्र थे, कारण कि वे सत्याग्रहकी हलचलोंसे सहानुभूति रखनेवाले युरोपियनोंकी कमेटीके चेअरमेन भी थे (देखिये अुसी किताबमें पृ. २७८)। अुस कमेटीका मैं खुद भी अेक सेक्रेटरी था।"

वर्धा, २६-८-'४८ कि० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

हमारा नया प्रकाशन

आरोग्यकी कुंजी

लेखक: **गांधीजी**; अनुवादक: **सुशीला नय्यर**

गांधीजीके शब्दोंमें अिस किताबको "विचारपूर्वक पढ़नेवाले पाठकों और अिसमें दिये हुअे नियमोंपर अमल करनेवालोंको आरोग्यकी कुंजी मिल जायगी, और अुन्हें डॉक्टरों तथा वैद्योंकी देहली नहीं तोड़नी पड़ेगी।"

कीमत १० आना डाकखर्च ०-२-०

व्यवस्थापक, नवजीवन कार्यालय

पोस्ट बॉक्स १०५, अहमदाबाद

समाज-सेवा

हम राजनीतिक दृष्टिसे अब आज़ाद हो गये हैं। अिसलिअे हम अपनी योजनाके अनुसार हमारा समाज बना सकते हैं। यह बड़ा मुश्किल काम है, जिसके लिअे देशके अूँचेसे अूँचे दिमागवालोंको, रचनात्मक कामके विशेष जानकारोंको और देशकी आम जनताको कड़ी मेहनत करनी होगी। क्योंकि हर आदमी किसी न किसी कामकी योग्यता रखता ही है। श्री जयरामदास दौलतरामने ठीक ही कहा था—"किसी सरकारी नौकरमें कितनी ही बड़ी बौद्धिक, शिक्षा सम्बन्धी या टेकनिकल योग्यता क्यों न हो, लेकिन अगर वह सेवाकी भावना नहीं रखता, तो अुसमें सबसे बड़ी योग्यताकी कमी मानी जायगी।" अभी हालमें आचार्य कृपलानीने हिन्दुस्तानके हर आज़ाद नागरिकसे अपील की है कि वह जनताकी सेवा करे। जनताकी सेवा हर नागरिकका फर्ज़ है—अुसका धर्म है। विदेशी हुकूमतके खिलाफ असहयोग आन्दोलन चलानेके लिअे युद्ध-समिति बनानेवाले महात्मा गांधीने पहला डिक्टेटर नहीं, बल्कि पहला सेवक कहलाना पसन्द किया था। श्री गोपालकृष्ण गोखलेने 'सर्वेण्ट्स ऑफ अिण्डिया सोसायटी' और लाला लाजपतरायने 'सर्वेण्ट्स ऑफ दि पीपुल सोसायटी' नामकी संस्था कायम की थी। रोमका पोप अपने आपको "भगवानके दासोंका दास" कहता है। अफगानिस्तानका बादशाह अमानुल्लाह अपनेको "जनताका सेवक" कहता था। सचमुच अिस दुनियामें मनुष्य जीवनका सबसे अूँचा मकसद मानवोंकी सेवा ही है। समाजसेवा लोकतंत्रकी जरूरी शर्त है।

हमारे शास्त्र हमें समाजकी सेवा करनेका आदेश देते हैं—"समाजके साथ हम जुड़े हुअे हैं; समाजमें हमारे अिस जीवनका अन्त होता है; अिसलिअे कर्तव्यके पैदा होनेपर हमें अुसे करना चाहिये और सहूलियतका रास्ता नहीं देखना चाहिये।" और समाजके कल्याणको निश्चित बनानेके लिअे वे हमें यह आदेश देते हैं—"खाने पीनेके मामलेमें तुम आपसमें अेक दूसरेको समान समझो। तुम सबको मैं अेक बन्धनमें बाँधता हूँ। जिस तरह रथके पहियेके सारे आरे नाहमें जुड़े होते हैं, अुसी तरह अीश्वरकी पूजा-अुपासनामें तुम सब साथ साथ जुड़ जाओ।"

"साथमें चलो; अेक साथ सलाह मशविरा करो; तुम सब अेकमन, अेकदिल हो जाओ; मेलमिलापसे अुसी तरह काम करो, जिस तरह आकाशके नक्षत्र मण्डल करते रहे हैं।"

समाज-सेवाके बारेमें अिनसे ज्यादा साफ और जोरदार शब्द और क्या हो सकते हैं? अगर हमारे देशवासी और खासकर हिन्दू लोग अपने पवित्र धर्मशास्त्रोंके अिन स्पष्ट आदेशोंके मुताबिक काम करते, तो हमें कभी मुसीबतभरे और भयानक दिन न देखने पड़ते। हमारे देशमें न तो किसी तरहका अछूतपन होता, न आजकी अभिशाप बनी जाति प्रथा होती। अिन दोनों बुराअियोंने न सिर्फ़ आदमीको आदमीसे अलग कर दिया, बल्कि करोड़ों लोगोंके लिअे तरक्कीके दरवाजे बन्द कर दिये। मार्कस ऑरेलियस कहता है—"जब किसी राजका काफी बड़ा वर्ग दूसरोंसे अलग रहता है और समान हितके लिअे काम करना बन्द कर देता है, तो अुस राजका अन्त नजदीक समझिये।" अगर हममें समाज-सेवाकी आदत होती, तो हिन्दुस्तानमें अिन्सानको हैवान बनानेवाले अछूतपन और जाति प्रथाको पोसना तो दूर रहा, हम अिन दोनोंके बारमें सोचते भी नहीं। समाजके प्रति सहानुभूति न होनेके कारण और अुसके महत्त्व और बड़प्पनको न समझने कारण सवर्ण हिन्दुओंने करोड़ों लोगोंको कैसे अवनतिके गढ्ढेमें पटक रखा है!

मनुष्यके भीतर आत्मा है, अैसा विश्वास किया जाता है। अुसका प्रमाण दोनों पहलुओंसे मिलना चाहिये—नैतिक और आध्यात्मिक। अिसका नैतिक पहलू है अपने आपको निःस्वार्थ बनने और अिच्छाओं पर

www.vinoba.in

काबू रखनेकी तालीम देना। आध्यात्मिक पहलू है हमदर्दी और प्रेम। अगर अपने भाजियोंके लिअे हमारे दिलमें प्रेम और हमदर्दी नहीं है और हम अुनकी सेवा नहीं करते और अुनके लिअे दुःख नहीं अुठाते, तो क्या यह कहा जा सकता है कि हमारे पास आत्मा है? अगर प्रेमका अुपयोग समाजको अेक साथ जोड़नेमें न किया जा सके, अगर प्रेम विश्वमें अुमंग और कोमल भावनाओंको जन्म न दे सके, तो वह बेकार है। जब कोअी आदमी प्यार करता है, तो अुसके भीतरकी आत्मा दूसरोंके साथ अेक होकर अपनी अेकताके सत्यको महसूस करती है, और वही अुसका आनन्द है। और, जब प्रेमके शक्तिशाली भावपर नियंत्रण रखकर अुसे सार्वभौम बना दिया जाता है, तो वह समाज-सेवा या मानव-सेवाका रूप ले लेता है। वह आदमीको अहंकारी या स्वार्थी नहीं रहने देता। जिस तरह मुर्गीका बच्चा अपनी छोटीसी दुनियाकी दीवालोंसे बाहर निकलनेके लिअे खूब कोशिश करता है — क्योंकि अुसे लगता है कि अण्डेके प्यारे जेलखानेके बाहर कोअी अैसी चीज है, जो अुसके जीवनको अिस तरह सार्थक बनानेकी राह देख रही है जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकता — अुसी तरह अुन्नत आत्मावाले आदमीका अहंकारके जेलखानेके भीतर दम घुटता है और वह सोचता है कि अुसे कोअी भी कीमत चुकाकर अुससे बाहर निकलना चाहिये, ताकि वह मानवताके समुद्रमें गहरा पैठ सके।

जहाँ हर आदमी समाज-सेवाके लिअे तड़पता है, जहाँ डॉक्टर, शिक्षक, अिंजीनियर, खेती विशारद, ताला बनानेवाला कारीगर और रसोअीघरकी नौकरानी — सब समाज-सेवाके मतलब और कीमतको समझते हैं, वहाँ दुःखदर्द, निराशा, भुखमरी, संताप, चिन्ता और धोखा-धड़ी कुछ नहीं रहता। अैसे समाजमें बड़े बड़े दुःख टल जाते हैं, भारी संकट दूर हो जाते हैं, मुसीबतोंसे बचाव हो जाता है, और मुश्किलें मिट जाती हैं, क्योंकि अुसके सारे मेम्बर अेकमन होते हैं और अेक दूसरेकी सेवामें लगे रहते हैं। अगर समाजकी सारी कोशिशोंके बावजूद, कोअी संकट आ ही जाता है, तो अुसका काँटा अेकदम निकल जाता है; क्योंकि सब लोग अपनी मरजीसे खुशी खुशी अुसका सामना करते हैं। यह कहना बेकार नहीं है कि बहुतसे लोग अेक साथ मरें, तो अुसका भी अेक खास आनन्द होता है।

अैसे समाजमें अीश्वरकी जरूरत कुछ अिनेगिने लोगोंको ही महसूस होती है, जिनमें अुसके लिअे सच्ची और अदम्य लालसा होती है। लेकिन जब आजके हिन्दुस्तानकी तरह "हर आदमी अपने ही बारेमें सोचता है और समाज या राष्ट्रके हितका खयाल तक नहीं करता", "जब मौत और निराशाके दुःखमें विश्वासघात किया जाता है और प्रेमको अपवित्र बनाया जाता है, जब जिन्दगी नीरस और बेकार मालूम होती है, तब आदमी अपनी आशाओंके खँडहर पर खड़ा होकर आकाशकी ओर हाथ फैलाता है, ताकि वह दुःख और निराशासे भरी दुनियाके बाहर रहनेवाले स्वर्गीय जनोंका स्नेह और ममता पा सके" (रवीन्द्रनाथ ठाकुर)। अुसे अिस दुनियामें मदद करनेवाला कोअी नहीं मिलता।

जब हिन्दुस्तान अपने यशके शिखरपर था, तब हम अपने जीवनमें समाजको सबसे पहला स्थान देते थे। यह बात शास्त्रोंके अिस आदेशसे जाहिर होती है — "गृहस्थी घरसे नहीं बनती, बल्कि गृहस्थके कर्तव्य करनेसे बनती है। अगर गृहस्थ अपना कर्म न करे, तो वह औरत बच्चोंसे भी नहीं बनती।" यहाँ कर्मका मतलब अपने परिवारके हितोंको देखना नहीं, बल्कि अपना विशेष कर्तव्य करना है — समाजके प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना है।

हम अनेक तरहकी धार्मिक विधियोंमें, बिना समझे शास्त्रोंको पढ़नेमें और यंत्रकी तरह अीश्वरका नाम जपनेमें तो बहुतसा समय खर्च करते हैं, लेकिन समाज और सामूहिक जीवनके बारेमें कभी नहीं सोचते। हम समान आकांक्षाओं और समान हितोंकी भावनासे कभी प्रेरित नहीं होते। अिसीलिअे हममेंसे ज्यादातर लोग अकेले अपना जीवन बिताते हैं और निराश बने भटकते फिरते हैं। समाजकी सेवा किये बिना ज्ञान, भक्ति और योग भी बुराअी और आलसका रूप ले सकते हैं। बरट्राण्ड रसेलने हिम्मतके साथ यह लिखा है कि अीश्वरके भक्त और शराबीमें कोअी फर्क नहीं है; क्योंकि दोनों अपनी ही फिक्र करते हैं, समाजकी नहीं। पहला अीश्वरके चिन्तनमें डूबा रहता है, तो दूसरा शराब पीनेमें मस्त रहता है।

जब हम गुलाम थे, तब हममेंसे भले लेकिन कमजोर आदमी शायद यही कर सकते थे। लेकिन अब हिन्दुस्तान आज़ाद हो गया है और हमें अपनी योजनाके मुताबिक अपना भविष्य बनाना है। आज हमारे चारों तरफ गरीबी, दुःखदर्द, कंगाली, गन्दगी, बुजदिली, जाहिली, आलस और स्वार्थ मुँह बाये खड़े हैं। अपने घरसे आँखें खोलकर रवाना होअिये और आप देखेंगे कि कोअी आदमी लापरवाहीसे अिधर अुधर थूँक रहे हैं और लगातार खाँस-खखार रहे हैं; कोअी आलसी अपनी दुकानोंकी गादियों पर लोट रहे हैं और मक्खियाँ अुड़ा रहे हैं; कोअी लैम्प पेड़ तले बैठकर गन्दी तम्बाखू या गाँजा फूँक रहे हैं; कोअी शतरंज या चौपड़ अुड़ा रहे हैं; कोअी गप्पे लगा रहे हैं या निकम्मे घूम रहे हैं; कोअी दूसरोंकी निन्दा कर रहे हैं, तो कोअी दूसरोंके कामकाजके बारेमें पूछताछ कर रहे हैं; कोअी गन्दे गड्ढेमें पेशाब कर रहे हैं, तो कोअी बिना किसी अुमंग और शक्तिके लापरवाहीसे हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं, वगैरा वगैरा। क्या हम यह सोचते हैं कि सियासी आज़ादी हमारी सब बुराअियाँ दूर कर देगी? अगर अैसा है, तो हम बहुत बड़ी गलती करते हैं। क्योंकि सियासी आज़ादी अुन्नतिका दरवाजा भर खोलती है। वह खुद अुन्नति नहीं है। मताधिकार पाये हुअे लोगोंको वह सिर्फ अैसी अूँचाअी तक जानेका मौका देती है, जिसका वे गुलाम रहते हुअे सपनेमें भी खयाल नहीं कर सकते थे। अगर अैसी बात है, तो अिस मनचाहे मकसदको हासिल करनेके लिअे हमें जीतोड़ कोशिश करनी होगी। हमारे हजारों लाखों नौजवानोंको समाज-सेवाका काम हाथमें लेना होगा और अुसके लिअे अपना जीवन अर्पण करना होगा। पंडित नेहरू और दूसरे नेताओंको समाज-सेवाका अेक नियमित कार्यक्रम बनाना होगा। तब श्रद्धा और लगनवाले हजारों नौजवान आगे आकर अिस सबसे पवित्र ध्येयके लिअे अपनी सेवायें अर्पण करेंगे। जब मैं यह सोचता हूँ तो मुझे ताज्जुब होता है कि हिन्दुस्तानी लोग स्वार्थी, आत्म-सन्तोषी और अपने समाजकी अुपेक्षा करनेवाले कैसे बन गये, जब कि वे अपनी रोजकी प्रार्थनामें आत्म-त्यागका जीवन बिताने पर ही खास जोर देते हैं:

"मेरा जीवन दूसरोंके लिअे त्याग करनेवाला हो; मेरी हर साँस, आँखें, कान, बुद्धि और भावना सब सेवाके लिअे अर्पण हों; मेरा वैदिक ज्ञान, बुद्धि, धन-दौलत, पंडिताअी सब सेवाके लिअे हों। यज्ञ भी पूर्ण त्यागकी भावनासे ही हो।" अिस निःस्वार्थ सेवाकी भावनाको हम भूल गये, और आज भी भूले हुअे हैं। अिस भावनाके बिना की हुअी सामाजिक या राजनीतिक सेवा छीना-झपटी, पदलोलुपता और सत्ता हथियानेकी वृत्तिको जन्म देती है। नतीजा यह होता है कि सामाजिक या राजनीतिक क्षेत्र भयंकर होड़ और पार्टियोंके संघर्षका क्षेत्र बन जाता है। आचार्य कृपलानीने कांग्रेसजनोंको सामयिक चेतावनी दी है, जिनका यह खयाल था कि आज़ादीकी लड़ाअीमें हिस्सा लेनेके कारण अुन्हें सत्ता और पद मिलने ही चाहियें। अुन्होंने कहा कि गीतामें यह लिखा है कि आदमीका जितना पुण्य होता है, अुतना ही वह स्वर्गका सुख भोगता है। और पुण्यके खतम होने पर वह पृथ्वी पर गिर जाता है। अुन्होंने आगे कहा — "जो लोग अपने पुराने कर्मोंके कारण अिस समय स्वर्गका सुख भोगते हैं, वे निकट भविष्यमें अवश्य गिरेंगे।"

www.vinoba.in

हमारा आदर्श पूर्ण निःस्वार्थ भावसे समाजकी सेवा करना था। गांधीजीने अुस आदर्शको फिरसे जिलानेकी भरसक कोशिश की थी। अिस बारेमें हमें गांधीजीका अुपदेश दिलमें बैठा लेना चाहिये और निष्काम सेवाको अपना मुख्य ध्येय बनाना चाहिये।

(अंग्रेजीसे) सुनाम राय

हरिजनसेवक

५ सितम्बर १९४८

गांधीजीका जन्मदिन

मुझे पता नहीं यह चर्चा कैसे पैदा हुअी कि गांधीजीका जन्मदिन हर सालकी तरह अिस साल मनाया जाय या नहीं? मैं तो यही मानकर चला था कि वैसा ही होगा।

गांधीजी अुन महापुरुषों और आदर्श दिखा जानेवाले रहबरोंमेंसे थे, जिनमें राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अीसा, जरथुस्त, सुकरात, कन्फ्युशियस, मुहम्मद आदिके नाम दिये जाते हैं। हिन्दुस्तानमें ही नहीं, बल्कि मेरे खयालसे सारी दुनियामें अैसे महापुरुषोंके मृत्युदिनकी अपेक्षा जन्मदिनका ज्यादा महत्व समझा जाता है। अुनका पैदा होना न सिर्फ अुन्हींकी जिन्दगीका आरम्भ बना, बल्कि दुनियामें अेक नये युगका आरम्भ करनेवाला साबित हुआ। अुनकी मृत्युको दुनियाने अेक बड़ी आफतके रूपमें देखा। अिनमेंसे कअीके मृत्युदिन याद भी नहीं रखे गये और अगर किसीका हर साल मनाया भी गया, तो वह शोक या रंजके दिनके रूपमें ही।

मामूली आदमीके विषयमें अिससे अुलटा रिवाज होता है। हिन्दुस्तानमें मुट्ठीभर लोग ही अैसे होंगे, जो अपने या अपने बच्चों और रिश्तेदारोंके जन्म या शादीके दिन मनाते हैं। करोड़ों लोग तो अैसे ही होते हैं, जो अपना या अपने बच्चोंका जन्मदिन न तो लिखकर रखते हैं, न अुसे याद ही कर सकते हैं। स्वयं गांधीजीने अपने विषयमें लिखा है कि अुनका जन्मदिन मनानेका अुनके परिवारमें रिवाज न था। मेरे खयालसे पूज्य कस्तूरबाकी जन्मतिथिका अब तक ठीक ठीक पता नहीं निकाला जा सका है। सरदार वल्लभभाअीकी जन्मतिथि अुन्हें तो याद ही नहीं थी। स्कूलके रजिस्टरोंको ढूँढ़कर निकालनी पड़ी। अिस सबका मतलब यह है कि आम तौरपर यह नहीं समझा जाता कि मनुष्यका जन्म खुद ही अेक अितनी बड़ी घटना है कि अुसका दिन याद रखना चाहिये। अपने जीवन और कामोंसे अपने जन्मके महत्वका मनुष्यको सबूत देना चाहिये। जब वह सिद्ध हो जाय, तब लोग अुसकी जन्मतिथि खोजनेकी मेहनत आप ही अुठाते हैं और अुसे मनाने लगते हैं। अगर निश्चित तिथि न मिले तो कोअी काल्पनिक तिथि ही अुसके लिअे तय कर देते हैं, और अुसी दिन अुसकी जयन्ती मनाने लगते हैं।

मगर मृत्युके दिनके बारेमें साधारण मनुष्योंके विषयमें दूसरी रूढ़ि है। सब दुनिया न सही, नजदीकके सम्बन्धी तो कुछ साल तक अपने पितरोंकी मृत्युतिथिको याद करते हैं और विधिपूर्वक मनाते हैं। अेक विनोदी मित्रका कहना है कि दुनिया बड़ी समझदार है कि महापुरुष और मामूली आदमीके बीच वह अैसा भेद करती है। महापुरुष अपने जन्मसे जगतका अुद्धार करता है और अुसकी मृत्युसे जगत दुःखके समुद्रमें डूबता है। साधारण आदमी पैदा होता है, तब पृथ्वीपर अेक भार बढ़ाता है और अपनी मृत्युसे खुदका और जगतका दोनोंका छुटकारा करता है। अगर वह अपने रिश्तेदारोंके लिअे कुछ मालमत्ता छोड़ जाता है, तब तो अुसकी मृत्युका अुनपर और भी अहसान होता है। अिसलिअे अुसके मरते समय अुन्हें कुछ शोक भी हो, फिर भी अन्दरसे अेक प्रकारकी खुशी ही होती है। अिसलिअे अिसमें ताज्जुब नहीं कि अपने पुरखोंके श्राद्धदिनको लोग धूमधामके साथ मिठाअी खाकर मनाते हैं। अपने जीवन-कालमें अपना जन्मदिन मनाकर भले किसीने अपना झूठा अभिमान बताया हो, लेकिन अुसके मरनेपर अुसके बच्चे वह जारी नहीं रखते।

पूज्य बापूके जन्मदिन और मृत्युदिनकी महिमाके बारेमें कौन शक कर सकता है? अगरचे अुनकी मृत्यु भी अेक महान विजय यात्रा ही थी, फिर भी राष्ट्रदिनके रूपमें अुनके जन्मदिन और मृत्युदिनमेंसे किसी अेकको ही मनाना व्यवहार्य हो, तो मुझे शंका नहीं कि वह जन्मदिन ही हो सकता है।

अपनी स्वभावसिद्ध प्रज्ञासे गांधीजीने अपने जन्मदिनको भी अेक अनुपम रूप दे दिया है। अुसका सम्बन्ध अुन्होंने चरखेसे जोड़ दिया है। अुनकी रायमें हिन्दको ही नहीं बल्कि दुनियाकी सब दलित प्रजाओंको चरखा ही अुनकी सबसे श्रेष्ठ और अमूल्य बख्शिस थी। जब तक अुस बख्शिसको हम समझपूर्वक स्वीकार नहीं करते, तब तक अुनके जन्मोत्सव या श्राद्धमें हम अुनकी जो कुछ पूजा करेंगे, वह अेक अूपर अूपरकी चीज रह जायगी। अिसलिअे यह योग्य ही है कि श्री धीरेन्द्रभाअी मजूमदार, जो पूज्य गांधीजीके बाद चरखा संघके अध्यक्ष हैं, गांधी सप्ताह मनानेमें चरखे पर ही बहुत जोर दे रहे हैं। मैं आशा करता हूँ कि जनता चरखेका मंत्र ग्रहण कर अुनकी अुम्मीदोंको सफल कर देगी।

वर्धा २१-८-'४८ किशोरलाल मशरूवाला

श्री भंसालीजीने अुपवास छोड़ दिया

[लोगोंको मालूम है कि श्री भंसालीजी ९ अगस्तसे बिलकुल निराहार अुपवास कर रहे थे। बारह दिन तक तो अुन्होंने पानी भी नहीं पिया। अिससे दूर और नजदीकके सब मित्रोंको बड़ी फिकर लगी। यह स्वाभाविक ही था। कल श्री सी० राजगोपालाचारी सेवाग्राम आये। अुन्हें अुपवासकी हकीकत और भंसालीजीकी मिलनेकी अिच्छासे अवगत किया गया। श्री राजाजी भैंसालीजीको मिलनेके लिअे सेवाग्राम आनेकी तकलीफ नहीं देना चाहते थे। अिसलिअे अुन्होंने तुरन्त ही नीचेका पत्र अुनके पास भेजा। श्री भंसालीजीके पास हिज अेक्सिलेन्सीकी आज्ञा तुरन्त पूरी करनेके सिवा दूसरा रास्ता ही न था। अेक छोटीसी प्रार्थनाके बाद अुन्होंने करीब २० दिनका अुपवास सन्तरेका रस लेकर छोड़ दिया। —कि० मशरूवाला]

सेवाग्राम, २७-८-'४८

प्रिय भंसाली,

मुझे आशा है कि तुम तुरन्त ही अुपवास छोड़ दोगे। मैं जानता हूँ कि तुम्हारा अुपवास अिसी तरह जारी रह सकता है और तुम प्रसन्नताके साथ मर भी सकते हो; और अिस दरमियान तुम्हें किसी तरहकी पीड़ा नहीं होगी, तुम पूरी तरह सुखी रहोगे। लेकिन तुम्हें यह नहीं करना चाहिये।

पिछले शोक और दुःखभरे महीनोंमें कअी जुल्म और अपराध हुअे हैं। अुनमें हिन्दुओं और अपनेको देशभक्त कहनेवालोंने कुछ कम नहीं किये हैं। तुम चुनाव करके किसीके गुण-दोषोंकी आलोचना नहीं कर सकते।

मातृभूमिके ऊँचे हितोंकी दृष्टिसे मैं तुम्हें अुपवास छोड़नेके लिअे कह रहा हूँ। मैं कह रहा हूँ अिसके सिवा तुम्हारे लिअे और किसी 'आश्वासन' की जरूरत नहीं है। मुझे विश्वास है कि मेरे पास जो अधिकार है, अुसमें वह आ जाता है।

तुम्हारा स्नेही
सी० राजगोपालाचारी

www.vinoba.in

मुहम्मद दाना थे

राष्ट्र गांधीजीको हर तरहसे अपनी पूजा देना चाहता है। सरकार भी उसमें पीछे नहीं रहना चाहती। उसने तय किया कि गांधीजीकी छापके टिकट निकालकर आज़ादीकी पहली सालगिरह मनाओ जाय। बेशक, डाकके टिकट पत्रोंपर लगानेके लिअे होते हैं और फिर डाक-घरमें उनपर पोस्टकी काली छापका लगना रोका नहीं जा सकता। अिसपर अेक गांधी भक्तको रंज हुआ है। गांधीजीके चित्रपर डाकका भद्दा काला दाग वे कैसे बरदाश्त करें!

अिस तरह पं. जवाहरलालजीकी सरकारने अपनी भक्ति दरसानेके लिअे जो विचारपूर्वक योजना बनाओ, वह दूसरे भक्तका शोक बढ़ानेवाली हो गयी है! वजह साफ है। दोनोंके दिलमें मूर्तिपूजा रही है। और जब कि अेकने मूर्तिकी स्थापनाको ही नजरमें रखा है, तब दूसरेने सिर्फ अुसकी बिगड़ी हुअी हालतको! मनुष्य या दूसरे प्राणियोंके किसी भी तरहके चित्र बनानेकी ही मनाही करनेवाले मुहम्मद साहब बेशक दाना थे।

गांधीजीकी हरअेक तसवीरको हम देवता या मन्दिरके ठाकुरके रूपमें न देखें। मूर्ति-पूजकोंका धर्मसिद्धान्त भी यही है कि किसी देवकी मूर्ति तब तक पूजकी वस्तु नहीं समझी जाती, जब तक अुसकी विधिसे स्थापना नहीं की जाती। गणपतिके हर किसी चित्रका आदर नहीं किया जाता। वैसे तो वह अनेक विवाह-पत्रिकाओं आदि पर छपता है, और कचरेकी टोकरीमें चला जाता है। खिलौनोंमें भी मिलता है। जब कि अुसके नामसे रखी हुअी सुपारी पूजी जाती है, और विसर्जन होनेपर ही मामूली सुपारी मानी जाती है। मतलब यह कि हम हर अेक चित्रको अेक-सा महत्व न दें। हमें जो प्रिय लगता हो, अुसका हम व्यक्तिगत या सामुदायिक संग्रह करें, औरोंकी अुपेक्षा करें।

वर्धा, २४-८-'४८ कि० मशरूवाला

महादेवभाअीकी प्रतिभा

[महादेव देसाअी और नरहरि परीख १९१७ में गांधीजीके साथ जुड़े, अुसके बहुत पहले ही दोनोंमें बड़ी गहरी दोस्ती हो चुकी थी। नीचेका पत्र महादेव देसाअीने नरहरि परीखको लिखा था, जिसे अब यहाँ प्रकाशित करनेमें माफी माँगनेकी जरूरत नहीं है।— कि० मशरूवाला]

बम्बअी: २ सितम्बर, १९१७

भाअी नरहरि,

यह पत्र बिलकुल खानगी लिख रहा हूँ। अिसमें लिखी बात तुम्हारे सिवा दूसरा कोअी न जाने, अैसा पहलेसे कहकर ही यह पत्र तुम्हें लिख रहा हूँ।

मैंने तुम्हें कहा है कि गांधीजीके मुकाम पर हररोज मैं नियमित हाजरी देता हूँ। ३१ अगस्तके दिन सबेरे बापूजीने कुछ अैसे वचन कहे, जिनसे मैं प्रेम, आश्चर्य और आनन्दमें डूब गया। अुस दिनकी छोटीसी लेकिन पत्रपर न लिखी जा सकनेवाली बातचीतको मैं पत्र पर लिखनेकी कोशिश करता हूँ: "तुम्हें रोज हाजरी देनेको कहता हूँ, अुसका कारण है। तुम्हें तो मेरे पास ही आकर रहना है। पिछले तीन दिनोंमें मैंने तुम्हारी शक्ति और योग्यता देख ली है। पिछले दो बरससे मैं जैसे नौजवानकी खोजमें फिरता था, वैसा मुझे मिल गया है। अिसे तुम मानोगे? मुझे अैसे आदमीकी जरूरत थी, जिसे मैं किसी दिन अपना सारा कामकाज सौंप कर शान्तिसे बैठ सकूँ, जिसका सहारा लेकर मैं निश्चिन्त हो सकूँ। और वह आदमी तुम्हारे रूपमें मुझे मिल गया है। होमरूल लीग, जमनादास[1] वगैरा सबको छोड़ कर तुम्हें मेरे ही पास आनेकी तैयारी करनी है। अिस जिन्दगीमें अैसे शब्द मैंने बहुत ही कम लोगोंसे कहे हैं — सिर्फ तीन जनोंको: पोलक, मिस श्लेशीन और भाअी मगनलाल। आज तुमसे वे शब्द कहने पड़ रहे हैं, और कहते हुअे मुझे आनन्द होता है। क्योंकि तुममें मैं तीन गुण खास तौरपर देख सका हूँ: प्रामाणिकता, वफादारी और होशियारी। भाअी मगनलालको अेक दिन जब मैंने अपने साथ ले लिया, तब बाहरसे देखनेमें मगनलालमें कुछ विशेषता नहीं थी। लेकिन आज तो तुम अुसे देखकर चकित हो जाते हो न? वह कोअी ज्यादा पढ़ा लिखा न था। मैंने प्रेमके लिअे सबसे पहले अुसे तैयार किया। पहले अुसने गुजराती टाअिप जमाना सीखा, फिर अंग्रेजी, और फिर हिन्दी, तामिल वगैरा सब तरहका टाअिप बड़ी होशियारीसे जमाना सीख लिया। और यह सब अुसने अितने थोड़े समयमें सीखा है कि मैं दंग रह जाता हूँ। अुसके बाद तो अुसने क्या क्या काम नहीं कर बताये। लेकिन मगनलालकी बात तो अेक तरफ रही। तुममें मैंने जो होशियारी देखी वह, मगनलालमें नहीं देखी। मुझे यह विश्वास हो गया है कि तुम अपने गुणोंके कारण मेरे बहुतसे कामोंमें अुपयोगी साबित होगे।" [यह सब मैं कुछ आश्चर्य, कुछ शरम और पूरी खामोशीसे सुनता रहा। लेकिन यहाँ मैं बोल पड़ा कि 'मैंने अपना कोअी काम करके तो बताया नहीं है', तो जवाबमें बापू यह बोले:] "तुम्हें क्या मालूम हो सकता है? मैं तो बहुत थोड़े समयमें आदमी को परख सकता हूँ। पोलकको मैंने पाँच घण्टेमें परख लिया था। मेरे . . . बारेमें लिखे पत्रको पढ़कर पोलकने मुझे अेक पत्र लिखा और मिलने आया। तभी मैंने अुसे पहचान लिया और बादमें तो वह मेरा ही बन गया। मेरे घरसे ही अुसने शादी की और वहींसे वह वकील बना। शादी करनेसे पहले कहने लगा कि मुझे थोड़ा कमा लेना चाहिये — बाल बच्चोंके लिअे। मैंने अुसे साफ कहा कि 'तुम मेरे हो। तुम्हारी और तुम्हारे बच्चोंकी चिन्ता मुझे है। मैं तुम्हारी शादी करा रहा हूँ, और तुम्हारे शादी करनेमें कोअी हर्ज नहीं है।' बादमें मेरे यहीं अुसकी शादी हुअी। खैर यह बात तो हो चुकी। लेकिन अब तुम्हें कहता हूँ कि तुम होमरूल, जमनादास वगैराकी बात छोड़ दो। हैदराबाद जाओ, अेकाध साल खाओ-पियो, दुनियाका मजा लो और तृप्त हो लो। हैदराबाद जानेके बाद जिस दिन और जिस पल तुम्हें अपनापन जाता मालूम हो, अुसी पल अिस्तीफा देकर चल देना और मेरे पास आकर बैठ जाना। [अिस पर मैंने कहा कि 'मैं तो आज भी आनेके लिअे तैयार हूँ।'] तुम तैयार हो, यह मैं जानता हूँ। लेकिन अभी तुमसे मेरा आग्रह है कि तुम जरा जिन्दगी देखो, मौज शौक करो और तृप्त हो जाओ। तुम्हारे Co-operation के ज्ञानकी भी मुझे जरूरत पड़ेगी। हमें तो अुस विभागकी बुराअियाँ दूर करनी हैं। बिलकुल निश्चिन्त रहकर थोड़े समय मौजमजा करके मेरे पास ही आ जाओ। मुझे आश्रमकी शालाके लिअे या दूसरे कामके लिअे नहीं, बल्कि खुद मेरे लिअे तुम्हारी जरूरत है। तुम अेक साल या छह महीने खा-पी लो, तब तक मैं अपना काम चला लूँगा।"

लगभग आधे पौन घण्टे तक मैं यह अमृत पीता रहा। अितनेमें लोगोंकी भीड़ होने लगी। और मेरी खानगी बात बन्द हो गयी। हाजरी तो मैं देता ही हूँ। और आज रातको पालघड़ तक अुनके साथ जानेका विचार है। बापूके अितनी ममता बतानेके बाद अुनके हाथ शंकरभाअी[2]के लिअे फल भेजनेमें मुझे कोअी बुराअी नहीं मालूम होती।

आज सुबह मैंने बापूसे कहा — "बैंकर[3] मुझसे बहुत नाराज हैं।" "क्यों भला?" "मेरे परसोंके निश्चयसे।" "तो अुनकी नाराजी सह लो। सह लेनेमें ही भला है।" अिस पर मैंने कहा —

१. श्री जमनादास द्वारकादास धरमसी, जो मिसेज अेनी बेसेंट द्वारा कायम की हुअी होमरूल लीगके ज्वाअिण्ट सेक्रेटरी थे।

२. नरहरिभाअीके सबसे बड़े भाअी, जो अुस समय बीमार थे।

३. श्री शंकरलाल बैंकर, जो अुस समय होमरूल लीगका आन्दोलन करते थे।

"अुनका यह कहना है कि 'तुम हैदराबाद न जाओ और यहीं रहो, तो बैंकके बजाय तुम्हें होमगार्ड लीगमें आने देनेमें गांधीजीको क्या हर्ज है?' अुनसे मैंने कह दिया है कि मेरे बदले 'आर्गेनाअिज़िंग वर्कर' करनेवाला दूसरा आदमी आपको मिल जायगा।' लेकिन अुन्होंने कहा — 'नहीं। तुमारे जैसा नहीं मिल सकता।' मैं बड़ी विषम स्थितिमें फँस गया हूँ। मैं अपनी जितनी कीमत करता हूँ, अुससे ज्यादा वे लोग मेरी क़ीमत करते हैं।" अिसपर बापूजीने थोड़ेमें कहा — "लोग हमारी जो क़ीमत करते हैं, अुसे हम स्वीकारें, तब तो मरनेकी ही नौबत आ जाय। भले वे अैसा करें, लेकिन अुसके साथ तुम्हारा कोअी सम्बन्ध नहीं। तुम बम्बअीमें रहो, अुस दरमियान शामको दो घंटे होमगार्ड लीगकी अवेतनिक सेवा करनेकी तुमने जो माँग की है, वह काफी है।"

अैसी स्थिति है। पत्र लम्बा हो गया है। लेकिन ये बातें तुम्हें नहीं तो किसे कहूँ? पत्र पढ़कर मुझे लौटा देना, क्योंकि बापूजीके जो शब्द मैंने पत्रमें लिखे हैं, वे लगभग जैसे के वैसे ही हैं। शायद कुछ समय बाद मैं अुन्हें भूल जाअूँ। पिताजीको या दूसरे किसीको होमगार्ड लीगमें शामिल होनेके निश्चयको बदलनेके कोअी कारण मैंने नहीं बताये। ये बातें अैसी है कि पत्रों द्वारा बतायें, तो बेवकूफी मानी जाय। किसी दिन पिताजी या गिन्नी[४]को यह पत्र पढ़नेके लिअे जरूर दूँगा। अभी तो अितना ही। शंकरभाअीके समाचार भेजते रहना। हैदराबाद मैंने तार किया था कि तीन सौ रुपये दो तो आ सकता हूँ। अुसका कोअी जवाब नहीं आया। हैदराबाद न गया, तो बापूजी कहेंगे वहाँ तक यहाँ बैंकमें ही रहूँगा और कुछ समय बाद बम्बअीमें घर लूँगा। बापूजी बुलावें अुस समय जानेकी अभीसे तैयारी करनी है। यह तैयारी बहुत बड़ी साधन सम्पत्तिकी है। भगवान मुझे यह शक्ति दे! गोखलेका अनुवाद कलसे शुरू करूँगा। सिर्फ सुबह ही थोड़ा थोड़ा होगा, क्योंकि शामके दो घण्टे तो होमगार्डके हैं। तुम्हारी गिन्नी अब अच्छी हो गयी होगी।

तुम्हारा
महादेव

पहले जिस जिन्दगीको बेकार मानकर कअी बार अूब अुठता था, अुसे अब worth living मानने जितनी श्रद्धा मनमें पैदा हुअी है। हालाँकि बापूजीने अितना सब कहकर मुझे शरममें दबा लिया है, फिर भी अपने बारेमें अुसे माननेमें अभी मैं अशक्त हूँ। सिर्फ अितना कह सकता हूँ कि अैसा सर्टिफिकेट मुझे जिन्दगीमें न तो कभी मिला, न कभी मिलेगा। भविष्यमें मैं किसी कामका निमित्त बनूँ और दुनिया मेरी तारीफ करे, तो भी ये भीतरके अुद्गार मेरा भीतरी और जिन्दगी भरका खजाना है।

(गुजरातीसे)

गिलोय और गवारपाठा

श्री नित्यानन्द सरस्वती, पिलानी (जयपुर स्टेट) लिखते हैं कि "साग सब्जीमें दिलचस्पी लेनेवाले लोग अपनी किसी अेक क्यारीमें 'हरी गिलोयकी बेल' और 'गवारपाठा' भी अवश्य लगावें। बरसातमें गिलोयकी कोपलोंका साग करेलेकी तरह पकानेसे जरा भी कड़वा न लगेगा और सारे साल बुखार न आयेगा। गवारपाठेका साग भूख बढ़ानेके लिअे अुत्तम है। ये दोनों जेठकी लूमें भी नहीं जलेंगे। वैसे भी अिनमें अधिक पानी डालनेकी जरूरत नहीं। सदा हरियाली भी रहेगी ही। साग भी जब चाहें बना सकेंगे।"

यदि कोअी पाठक अिनमेंसे कोअी चीज मँगाना चाहें, तो अूपरके सज्जनको लिखें। वे लगानेकी तरकीब और हरा नमूना भी भिजवा देंगे। दोनों ही वनस्पतियाँ अुखाड़नेके अेक सप्ताह बाद भी लग जाती हैं।

वर्धा, २५-८-'४८

कि० मशरूवाला

४. गृहिणीके लिअे बंगाली भाषाका छोटा रूप।

अेक सह-सम्पादककी टीका

['हरिजनपत्रिका' ('हरिजन' का बंगाली संस्करण) के सम्पादकने मेरे ८ अगस्त १९४८ के 'भूलका अिकरार' नामक लेखके साथ जो अेक नोट जोड़ा है, अुसका हिन्दुस्तानी अनुवाद यहाँ देना ठीक होगा।
— कि० मशरूवाला]

दुःखकी बात है कि मानभूमका सवाल बंगाल और बिहारमें कशमकश पैदा कर रहा है। गांधीजीने दुःखके साथ कहा था: "हर अेक अपने और अपने कुनबेके बारेमें सोचता है। सारे हिन्दी संघके बारेमें कोअी नहीं सोचता।" दो प्रान्तोंके बीच अपने अपने स्वार्थका झगड़ा हो सकता है, और अुसका अुठना स्वाभाविक भी है। लेकिन अैसे वक्त यदि दोनों ओरसे सारे हिन्दी संघके हितका खयाल रखा जाय, तो अिन मतभेदोंसे कोअी नुकसान नहीं हो सकता। तब अिन भेदोंको सत्यके आधार पर सुलझानेका तरीका भी ढूँढ़ा जा सकेगा। श्री बद्रीनाथ वर्माके लेखने खासकर बंगाली पाठकोंकी दृष्टिसे मेरे मनमें नीचे लिखे विचार पैदा किये हैं।

श्री किशोरलाल भाअीने जिस सर्क्यूलरके आधार पर अपना 'बुरे साधन' वाला लेख लिखा था, अुसके बारेमें जब अुन्हें पता चला कि वह जाली है, तो अुन्होंने माफी माँगी और अपने लेखसे होनेवाले नुकसानकी पूर्ति करनेकी कोशिश की है। अुन्होंने सर्क्यूलर भेजनेवाले भाअीके बारेमें लिखा है कि "जिन मित्रने यह मेरे पास भेजा है, वे मेरे साथ धोखा नहीं कर सकते। अिसलिअे मुझे भय है कि खुद अुनके साथ भी सर्क्यूलर भेजनेवालोंने धोखा किया है और अुन मित्रने बिना सोचे समझे अुसे मेरे पास भेज दिया है।"

दूसरी तरफ मानभूमके कार्यकर्ताओंके पत्र 'मुक्ति' ने अपने २६ जुलाअी १९४८ के अंकमें अिस सर्क्यूलरके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा है, वह पाठकोंकी जानकारीके लिअे नीचे दिया जाता है:

"अुन्होंने (श्री किशोरलालने) कहा है कि बिहार सरकारने यह कार्यक्रम बनाया है। जो भी वह सर्क्यूलर बिहार सरकारकी काम करनेकी दिशा और नीतिके अनुकूल है, अुसे बिहार सरकारके स्थानीय नुमाअिन्दोंने गढ़ा है। बिलकुल कायदेकी दृष्टिसे तो अुसे सरकारी सर्क्यूलर कहने पर अेतराज किया जा सकता है, लेकिन असलमें तो वह बिहार सरकारका ही काम है। श्री मशरूवालाने अुन प्रस्तावोंके बनानेवालोंके बारेमें जो बयान दिया है, अुसपर सिर्फ जाब्तेकी कार्रवाअीकी नजरसे तो शक अुठाया जा सकता है, लेकिन सचाअीकी दृष्टिसे वह बिलकुल सही है।"

मानभूमके ये कार्यकर्ता स्वर्गीय ऋषि निवारणचन्द्र दासगुप्तके साथी और अनुयायी हैं। अिस सर्क्यूलर पर बहस करनेमें अिन कार्यकर्ताओंके विचार और साथ ही श्री वर्माके विचार जान लेना जरूरी है, कारण कि आदरणीय कार्यकर्ता और माननीय मंत्री दोनोंकी तरफ लोगोंका अेक-सा ध्यान जाना चाहिये।

अिसलिअे जो भी बिहारके शिक्षा-मंत्री यह कहते हैं कि वह सर्क्यूलर सरकारी सर्क्यूलर नहीं था, फिर भी सरकार अप्रत्यक्ष रूपसे अुस सर्क्यूलरके लिअे जिम्मेदार है या नहीं, यह सवाल रह जाता है।

बिहार सरकारके अफसरोंकी तारीफमें श्री वर्माने कहा है: "न सरकारके किसी अफसरका अैसे किसी कामसे सम्बन्ध है, जिसे बहुत दूरके अर्थमें भी 'बुरा या गन्दा' कहा जा सके।" अपने विभागके अफसरोंके लिअे मंत्रीकी अिस तरहकी बिना शर्त तारीफसे अुसकी अपने अधिकारी वर्गके प्रति हद दर्जेकी नरमी जाहिर होती है। लेकिन यदि मंत्री अपने अफसरोंको प्रशंसापत्र देता है, तो अिसका मतलब यह नहीं हुआ कि दूसरे लोग हलके हैं। श्री वर्माने सर्क्यूलरकी प्रामाणिकता पर शक किया है और अुसके बारेमें मानभूमके बंगालियोंको

www.vinoba.in

फटकारा है। लेकिन अुस शकभरी प्रामाणिकताके बारेमें लोगोंके मनमें तो शक अभी कायम है। कारण 'मुक्ति' अेक अैसा पत्र है, जिसकी आम लोग कदर करते हैं।

मानभूममें हिन्दी प्रचारका अुल्लेख करते हुअे श्री वर्मा लिखते हैं: "प्रायमरी दर्जोंमें, जहाँ तक सम्भव है, बच्चोंको अुनकी मातृ-भाषा द्वारा ही शिक्षा देनेका प्रबन्ध किया जा रहा है। अूँचे दर्जेके पाठ्यक्रमकी योजना अिस तरह बनाअी गअी है कि शिक्षाका माध्यम धीरे धीरे हिन्दी हो जाय।" सवाल यह है कि पिछड़ी हुअी जातियोंके लोग — जैसे सन्थाल, मुण्ड, हो और अुराअूँ वगैरा — बीचके दर्जोंमें कौनसी भाषाको अपनी शिक्षाका माध्यम बनायेंगे — हिन्दी या बंगाली? मानभूम क्षेत्रमें बंगालीके अधिकारका अुल्लेख करते हुअे श्री मशरूवाला ११ जुलाअी १९४८ के 'हरिजनसेवक'में अपने 'बुरे साधन' नामक लेखमें लिखते हैं:

> "यह तारीफकी बात है कि बिहार सरकारने प्रान्तके लिअे अेक भाषा — हिन्दी — को मंजूर कर लिया है, हालाँकि जहाँ तक मुझे मालूम है हिन्दी बिहारके किसी हिस्सेकी मातृभाषा नहीं है। अैसा करके अुसने भाषाओंके नाम पर होने वाले झगड़ोंसे अपनेको बचा लिया है। क्योंकि अगर अुस बड़े प्रान्तके हर हिस्सेने अपनी विशेष भाषाका दावा किया होता, तो अिस झगड़ेकी बहुत ज्यादा संभावना थी। लेकिन बंगाली भाषाका सवाल बिहारकी अलग अलग बोलियोंसे बिलकुल जुदा है। अिन बोलियोंने बंगालीकी तरह साहित्यिक विकास नहीं किया है, न अुनका साहित्यिक भाषायें होनेका दावा है। बंगाली पड़ोसके प्रान्तमें लाखों लोगों द्वारा बोली और लिखी जाती है, जो बिहारसे भी बड़ा है। वह फलीफूली भाषा है। हिन्दीको आज जो दरजा हासिल है, अुसके लिअे वह बंगालीकी बहुत ऋणी है। अिसलिअे बंगालीको दबानेकी अिच्छा नहीं होनी चाहिये, क्योंकि वह प्राकृतिक या अैतिहासिक घटनाओंके कारण बिहारके कुछ खास हिस्सोंकी भाषा बन गयी है।"

यहाँ श्री किशोरलाल बंगाली भाषाके दावोंके बारेमें जो कुछ कहते हैं, अुसे विवादका विषय बना हुआ सर्क्युलर न तो किसी तरह छूता है और न अुस पर कोअी असर डाल सकता है। हिन्दी बिहारके बहुतसे हिस्सोंकी मातृभाषा नहीं है। वहाँ कअी स्थानीय भाषायें बोली जाती हैं। लेकिन बिहारने हिन्दीको अपना कर भाषा सम्बन्धी झगड़ोंसे अपनेको बचा लिया है। अिसी तरह मानभूम, धालभूम वगैराके हिस्से भी पिछली दो तीन सदियोंसे बंगाली भाषाको अपनाकर अिस झगड़ेसे अपने आपको बचाते रहे हैं। अिसी क्रियाको श्री किशोरलालने कुदरती और अैतिहासिक विकास कहा है, और अिसलिअे कुदरती तौर पर बोली जानेवाली बंगाली भाषाको दबानेकी कोशिशोंकी निन्दा की है।

श्री वर्माने कहा है कि अिस हिस्सेके ७० से ८० फी सदी लोग हिन्दी या मुख्य रूपसे संथाली बोलते हैं और बंगाली अुनपर जबरन लाद दी गयी है। लेकिन सेन्सस रिपोर्टोंका क्रम यह बतलाता है कि मानभूममें ७० फी सदी लोगोंकी मातृभाषा बंगाली है। समय समयपर ली जानेवाली सेन्ससकी रिपोर्टें भाषाके अैतिहासिक विकासके अुस पहलूका सबूत देती हैं, जिसका श्री किशोरलालने जिक्र किया है। पाठक तुरन्त यह देख सकेंगे कि माननीय मन्त्री श्री वर्माका बयान अिस अैतिहासिक क्रमका अंग नहीं है। श्री वर्माने मानभूमके कुछ बंगालियोंको 'बाहरसे आकर बसनेवाले' कहा है। यह अुनकी मेहरबानी है कि अुन्होंने सभीको बाहरवाले नहीं कहा है। क्या मैं नम्रतासे पूछ सकता हूँ कि ये बाहरवाले कौन हैं? स्वर्गीय निबारनचन्द्र दासगुप्त ढाकासे आकर मानभूममें बस गये थे, जहाँ अुन्होंने और अुनके साथियोंने देहातोंमें ग्रामसेवाका काम किया था। मेरा विश्वास है कि श्री वर्माने अिन कार्यकर्ताओंको तो बाहरवाले नहीं ही कहा है।

थोड़ेमें, मानभूमका विवाद अब खतम हो जाना चाहिये। श्री किशोरलालने अिसका रास्ता बता दिया है। अैतिहासिक स्थितिको सच्चे रूपमें समझनेसे ही यह विवाद मिट सकता है। मंत्रियोंके बयान निकालनेसे, नौकरशाही जुल्मोंसे, जनमत लेनेसे, या अखबारोंमें कड़वी टीकायें निकालने और प्रचार करनेसे या अिन सबकी संयुक्त मददसे भी यह समस्या हल नहीं हो सकेगी। ये सब फूट और संघर्षको ही बढ़ायेंगे।

हिन्दुस्तानके हितके बजाय जो अपना ही हित देखते हैं, वे अिस समस्याको नहीं सुलझा सकेंगे। अिसे तो जनताके कुछ विद्वान और गैरतरफदार सेवक ही अेक साथ बैठकर सुलझा सकते हैं, जो अैतिहासिक क्रमको अच्छी तरह समझ सकते हैं और सिर्फ हिन्दुस्तानके हितका ही ध्यान रखते हैं। श्री किशोरलालने अपने 'भूलका अिकरार' नामक लेखके अन्तमें यह साफ शब्दोंमें बता दिया है।

श्री वर्मा अेक कांग्रेसी मंत्री हैं। अिस नाते वे अपना यह विचार प्रकट न करते तो अच्छा होता कि 'संभव है केन्द्रीय सरकार हिन्दीको राजभाषा मान ले।'

(अंग्रेजीसे)

सम्बन्धियोंके पक्षपातकी सजा

कुछ समय पहले चीनमें दो विद्वानोंको अिस तरह बोलते सुना गया था:

"हमारे यहाँ जो कोअी भी सरकारी अफसर बनता है, वह अितना बुरा क्यों बन जाता है?" अुनमेंसे अेकने पूछा।

दूसरेने जवाब दिया — "अरे, अैसी बात नहीं है। तुम हकीकतोंको बिलकुल अुलटे ढंगसे बयान कर रहे हो। अिसके बजाय यह कहना चाहिये कि चीनमें कोअी भी बुरा आदमी सफल अधिकारी बन जाता है।"

यह बात मुझे अुस दिन याद आ गयी, जब मैंने कुछ निःस्वार्थ समाज-सेवकोंको घूँसखोरी, कालाबाजार वगैराके अभिशाप पर चर्चा करते सुना, जिसने बदकिस्मतीसे १५ अगस्त, १९४७ के बाद हमारे देशमें अेक भयंकर बीमारीका रूप ले लिया है।

अिस 'अभिशाप'के बहुतसे कारण हैं। लेकिन अिस समय मैं सिर्फ अेक ही कारणकी चर्चा करूँगा। वह है सम्बन्धियोंका पक्षपात करनेकी बुराअी। जब छोटे या बड़े सरकारी ओहदोंपर काम करनेवाले लोग अपने रिश्तेदारों और दोस्तोंको — अुनके प्रति पूर्ण न्यायका खयाल रखकर या अुनके गुणोंका विचार करके नहीं बल्कि यह मानकर मानो वे अुनके पोते या भतीजे हों (अंग्रेजीके 'नेपोटिस्म' शब्दका मूल अर्थ यही होता है) — नौकरियाँ देते हैं, तो वे अीश्वरी शक्तिका यानी गुणवान और योग्य व्यक्तिका दोहरा अपमान करते हैं, क्योंकि वे योग्यताकी अुपेक्षा करते हैं और अयोग्यताको बढ़ावा देते हैं।

जब सद्गुणका — यहाँ मैं अिस शब्दका मोटेसे मोटे अर्थमें अुपयोग करता हूँ — अपमान किया जाता है, तो सजाकी देवीको गुस्सा आता है और वह देर अबेर अुस आदमीको बिना चूके सजा देती है, जो अुसके पवित्र गुस्सेको अुभाड़ता है। अिस तरह गुनाह करनेवालेको आखिरमें सजा तो मिलती ही है। साथ ही साथ अुन मूल्यों और सत्योंका अपमान और पतन भी होता है, जो सभ्यताकी आत्मा हैं।

और मैं नम्रतासे पूछता हूँ कि योग्यता और गुणोंकी यह हत्या किस लिअे? क्या अिसलिअे कि "हत्यारे" ज्यादा ज्यादा मात्रामें भौतिक चीजें — तुच्छ और दिखावटी चीजें — अिकट्ठी कर सकें? सचमुच, जैसे "नो रिट्रीट फ्रॉम रीजन"का लेखक कहता है, "आज मनुष्यकी जिन्दा रहनेकी अिच्छाके सामने भौतिक चीजोंके बोझसे दबे हुअे राजनीतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्योंको अुस बोझसे मुक्त करनेका बड़ा नाजुक सवाल पैदा हो गया है।"

www.vinoba.in

सच पूछा जाय तो अुसी लेखकके शब्दोंमें हमारे जमानेके अिस अभिशापका कारण यह है कि हम "अपनी आत्माकी मुक्तिके लिअे कोशिश करनेके बजाय भौतिक चीजें अिकट्ठी करनेमें श्रद्धा रखने लगे हैं।"

फिर भी, क्या गांधीजी बीसवीं सदीकी अिस खा जानेवाली भयंकर बीमारीके प्रति हमें सजग बनानेके लिअे ही हमारे बीच आकर नहीं जिये? क्या अुनकी मेहनत और अुपदेश बेकार जायँगे? अगर अैसा हुआ तो यह कहा जायगा कि हमने गांधीजीको तीन गोलियोंसे नहीं, बल्कि ३० करोड़ गोलियोंसे मारा है।

(अंग्रेजीसे) जी० अेम०

वनस्पति घी और तेल

मुझे कुछ खत मिले हैं, जिनमें 'हरिजन'में शुद्ध घीका पक्ष लेनेके लिअे धन्यवाद दिया गया है। नीचे अेक नमूनेका पत्र दिया जाता है, जो किसान-वर्गके अेक नुमाअिन्दाने लिखा है:

"वनस्पति कअी तरहसे देशको बरबाद कर रहा है। वह लोगोंको नैतिक दृष्टिसे गिरा रहा है, क्योंकि वे शुद्ध घीमें अुसे मिलानेका पाप करते हैं। अिसकी वजहसे बाजारमें शुद्ध घी पाना और शुद्ध घीके नामसे बताअी जानेवाली चीज पर भरोसा करना बड़ा मुश्किल हो गया है। अगर कामयाब होने तक आप अिस विषय पर लिखते रहें और वनस्पतिकी पैदावारको रोकनेमें अपनी सारी शक्ति और प्रभाव लगा दें, तो देशकी बहुत बड़ी सेवा होगी। अगर अिससे थोड़े समयके लिअे घीकी तंगी हो जाय, तो भी कोअी परवाह नहीं। हमारी जालसाज दुनियामें वनस्पतिको रंग देने और अिसी तरहके दूसरे अुपायोंसे ही काम नहीं चलेगा। अुसकी पैदावारको ही पूरी तरह रोक देना जरूरी है, ताकि लोगोंको ज्यादा तेल मिल सके और घीके साथ वनस्पति मिलानेकी धोखेबाजी बन्द हो।

"साथ ही, आप मेहरबानीसे दुधारू मवेशीके कतलको रोकनेके लिअे कानून पास करानेकी कोशिश करें और गोपालनको बढ़ावा दें; क्योंकि गायें आखिरकार दूध और घी देनेवाली हैं और खेतीका मुख्य आधार हैं। अिससे शुद्ध घीकी कमी ज्यादा जल्दी दूर हो सकेगी।

"मैं भगवानसे प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको अपनी कोशिशोंमें सफलता दे, जिससे शुद्ध घी तैयार किया जा सके और लोगोंको स्वराज्यका आनन्द मिल सके।"

मैं आम तौरपर पत्र लिखनेवाले भाअीके विचारोंसे सहमत हूँ। लेकिन साथ ही अैसा करनेमें आनेवाली मुश्किलोंको भी पूरी तरह समझ लेना जरूरी है। अिन मुश्किलोंके कारण खुद गांधीजीको भी अिस बारेमें सफलता नहीं मिल सकी। अुनके सामने मेरी तो कोअी गिनती ही नहीं। यहाँ खास सवाल नैतिकताका है। लेकिन जहाँ नैतिकता और आर्थिक हितोंका संघर्ष होता है, जिस सभ्यतामें अुद्योगीकरणका मुख्य हाथ होता है, वहाँ हमेशा अुलटी दलीलें देकर या अधूरे अुपायोंसे हल करनेकी कोशिश करके नैतिक सवालको अुड़ा देनेकी कोशिश की जाती है। वनस्पतिके बारेमें अैसा होना बहुत सम्भव है।

वनस्पति पैदा करनेवालोंकी अेक दलील यह है कि वनस्पतिके बनने बाद ही घीमें मिलावट करना शुरू नहीं हुआ। अिससे पहले अुसमें व्यापारके लिअे चर्बी और दूसरी गन्दी चीजें मिलाअी जाती थीं। वनस्पतिने मिलावटको बढ़ावा दिया है, फिर भी वह चर्बी वगैरासे तो कअी गुना अच्छा है। बेशक, ये दलीलें झूठी हैं, और जो बात जड़से ही अनुचित है, अुसे अुचित ठहरानेके लिअे ही दी जाती हैं। यह तो अुस दूध बेचनेवालेकी तरह हुआ, जो लोगोंसे कहता है—"यह सच है कि मैं अपने दूधमें पानी ही मिलाता हूँ। लेकिन मैं जनताको अिस बातका विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मैं दूधमें हमेशा शुद्ध और स्वच्छ किया हुआ पानी ही मिलाता हूँ; मामूली दूधवालेकी तरह कोअी भी गन्दा पानी नहीं मिलाता। जिन लोगोंको दूधमें मिलानेके लिअे शुद्ध और स्वच्छ पानीकी जरूरत हो, अुन्हें देनेके लिअे मैं तैयार हूँ।"

अुनकी दूसरी दलील यह है कि (अुदाहरणके लिअे) अगर लोग साधारण बीड़ियोंके बजाय सफाअीसे बन्द की हुअी सिगरेटें ज्यादा पसन्द करते हों और अुन्हें खरीदनेके लिअे तैयार हों, तो क्या अुन्हें वह सन्तोष देना बुरा है? अुसी तरह अगर लोग जमा हुआ दानेदार शुद्ध तेल चाहते हैं और वैज्ञानिक लोग अिस बातका सबूत देते हैं कि अिस रूपमें तेल खानेसे लोगोंकी तन्दुरुस्तीको कोअी नुकसान नहीं पहुँचता, तो आपको अुसकी पैदावारका विरोध क्यों करना चाहिये? आपको अैसे कुछ अुपायोंसे सन्तोष कर लेना चाहिये, जो घीमें अुसकी मिलावटको रोकें। अगर आप चाहें, तो शुद्ध घीमें वनस्पति मिलानेवालोंको कड़ी सजा दीजिये। साथ ही वैज्ञानिक और अिन्स्पेक्टर काफी सावधान रहें और खरीदार ज्यादा ध्यानसे घी खरीदें। अितनेसे आपको सन्तोष करना होगा। हमारी अिस बुराअियोंवाली दुनियामें सारी धोखेबाजीको रोकनेकी आशा करना दुराशा ही है। आपको अेक बढ़ते हुअे अुद्योगको सिर्फ अिसीलिअे नहीं खतम कर देना चाहिये कि आप अुसकी बुराअियों पर पूरा काबू नहीं रख सकते।

वनस्पतिके अुद्योगको अुचित ठहरानेके लिअे यह भी कोअी दलील नहीं है। फिर भी यह बहुत संभव है कि आजकी हालतोंमें वनस्पति पैदा करनेवाले लोग अधिकारियोंको अपने पक्षमें कर लें।

आज तो तेल भी मिलावटकी बुराअीसे नहीं बचे हैं। मैं समझता हूँ कि मूँगफली और दूसरे खानेके तेलोंके साथ बदबू दूर किया हुआ केरोसिन मिलाया जाता है। पूर्व पाकिस्तानसे अेक भाअी शिकायत करते हुअे लिखते हैं कि सरसोंके तेलके साथ — जो बंगालमें आम तौरपर खाया जाता है — बाचका तेल मिलाया जाता है, जिससे लोगोंको फोड़े फुंसी और लीवरके रोग हो जाते हैं।

सौ बातकी अेक बात यह है कि कोअी भी अुपाय कामयाब हो अुसके पहले हम सबको — किसानों, मवेशी पालनेवालों, दलालों, अुद्योगपतियों, वैज्ञानिकों और सरकारी नौकरोंको — नैतिक दृष्टिसे बहुत आगे बढ़ना होगा। सिर्फ सजाके कानून बना देनेमें मेरा विश्वास नहीं है। जनताका जोरदार मत हमेशा कानूनसे ज्यादा ताकतवर होता है।

अिसलिअे जनता और कार्यकर्ताओंको लोगोंका नैतिक स्तर अूँचा अुठानेकी भरसक कोशिश करनी चाहिये। खाने लायक तेलोंकी पैदावार और बिक्रीमें लगे हुअे लोगोंकी अन्तरात्मासे यह अपील की जाय कि वे तेलोंमें वनस्पति या दूसरी कोअी चीज न मिलानेका व्रत ले लें। कोअी कानून तभी सफल होता है जब मुट्ठी भर लोगोंको छोड़कर बाकी सब आम तौरपर अुसे मानते हों। जिस कानूनको ज्यादातर लोग तोड़ते हैं, वह कभी सफल नहीं हो सकता।

वर्धा, २५-८-'४८ किशोरलाल मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
स्वराज्यकी सफलता	... दा० मूं०	२२९
भूल सुधार	... किशोरलाल मशरूवाला	२३०
समाज-सेवा	... सुनाम राय	२३०
गांधीजीका जन्मदिन	... किशोरलाल मशरूवाला	२३२
श्री भंसालीजीने अुपवास छोड़ दिया	... किशोरलाल मशरूवाला	२३२
मुहम्मद दाना थे	... किशोरलाल मशरूवाला	२३३
महादेवभाअीकी प्रतिमा	...	२३३
अेक सह-सम्पादककी टीका	... किशोरलाल मशरूवाला	२३४
सम्बन्धियोंके पक्षपातकी सजा	... जी० अेम०	२३५
वनस्पति घी और तेल	... किशोरलाल मशरूवाला	२३६
टिप्पणी:		
गिलोय और गवारपाठा	... कि० मशरूवाला	२३४

www.vinoba.in